

संपादकीय

बढ़ती बेरोजगारी

अखिरकार मोदी सरकार ने मान लिया है कि बीते वर्ष में बेरोजगारी पिछले साढ़े चार दशकों में सबसे ऊंचे पायदान पर रही। नयी सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के बाद जारी किये गये आंकड़े वही हैं, जिन्हें चुनाव से पहले लीक होने पर विवाद हुआ था और सरकार ने आधे-अधूरे मानकर खारिज कर दिया था। जाहिर है सरकार चुनावी मुहिम पर बेरोजगारी के मुद्दे को हावी नहीं होना देना चाहती है। मगर यह देश में हर किसी की चिंता का विषय होना चाहिए कि पिछले 45 वर्षों में सर्वाधिक 6.1 प्रतिशत बेरोजगारी दर दर्ज की गई है। इन आंकड़ों की अवधि वर्ष 2017-18 है। इससे बढ़कर चिंता की बात यह है कि ये आंकड़े ऐसे समय पर स्वीकार किये जा रहे हैं जब देश की विकास दर पिछले पांच सालों में न्यूनतम स्तर 5.8 फीसदी है। वित्त वर्ष 2017-18 की चौथी तिमाही में विकास दर 7.2 फीसदी मापी गई थी। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि कहीं यह मंदी की आहट तो नहीं है। निःसंदेह कार्यभार संभालने के बाद वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण को कई मोर्चों पर मुकाबला करके अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का दायित्व निर्वहन करना है। निश्चित रूप से विकास के इंजन को ईंधन देने से ही विकास दर व रोजगारों में वृद्धि हो सकती है। दरअसल नवीनतम आंकड़े इस मायने में भी चिंता का विषय हैं कि ये आंकड़े अर्थव्यवस्था की नकारात्मक तस्वीर उकेरते हैं। हालांकि सरकार की अपनी दलीलें हैं और वह प्रति व्यक्ति खपत बढ़ने को बेरोजगारी से नहीं जोड़ती। यानी रोजगार संगठित क्षेत्र में न हों मगर रोजगार असंगठित क्षेत्र में आकार ले रहे हैं। यह एक हकीकत है कि नोटबंदी व जीएसटी का असंगठित क्षेत्रों पर प्रतिकूल असर पड़ा है। बंगलुरु स्थित अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के सेंटर ऑफ सस्टेनेबल एंजलॉयमेंट द्वारा जारी एक सर्वेक्षण के अनुसार नोटबंदी के बाद के दो वर्षों में असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले पचास लाख लोगों ने अपने रोजगार से हथ धोया है। इसमें दो राय नहीं कि श्रम प्रधान देश भारत में रोजगार का बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र द्वारा ही सृजित किया जाता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली की विसंगतियों के चलते जो पढ़े-लिखे लोग नौकरी की तलाश में निकलते हैं, वे आधुनिक उद्योगों की जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते। मजबूरी में वे असंगठित क्षेत्रों में छोटी-मोटी नौकरियों में संतुष्ट होकर रह जाते हैं। नोटबंदी की बाद बची-खुची कसर जीएसटी के 11 व्यायन में व्याप्त विसंगतियों ने पूरी कर दी। कुल मिलाकर रोजगार सेक्टर अभी तक इन झटकों से उबर नहीं पाया है। बेरोजगारी के हालिया आंकड़ों का चिंताजनक पहलू यह भी है कि बेरोजगारी का दायरा शहरों में ज्यादा चिंताजनक है, जो 7.8 फीसदी बताया जाता है।

अगले 3 सालों तक दुनिया की सबसे तेज तरवकी करने वाला देश रहेगा भारत: विश्व बैंक

वाशिंगटन (आरएनएस)। भारत आने वाले समय में सबसे तेजी से वृद्धि करने वाली प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्था वाला देश बना रहेगा। यह दावा विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में किया गया है। इसके अनुसार, बेहतर निवेश तथा निजी खपत के दम पर अगले तीन साल तक भारत की आर्थिक वृद्धि दर 7.50 प्रतिशत रह सकती है, जो पूरी दुनिया में सर्वाधिक होगी। विश्व बैंक की यह अहम रिपोर्ट ऐसे समय आई है जब केंद्रीय सांख्यिकी

कार्यालय (सीएसओ) के आंकड़े सामने आने के बाद नरेंद्र मोदी सरकार को आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें कहा गया है कि वित्त वर्ष 2018-19 की चौथी तिमाही में देश की आर्थिक वृद्धि दर पांच साल के न्यूनतम स्तर 5.80 प्रतिशत पर आ गई। यह चीन की तुलना में कम है। सीएसओ ने अपनी रिपोर्ट में कृषि एवं विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि की दर सुस्त पड़ने की आर्थिक गतिविधियों में गिरावट के लिये

जिम्मेदार बताया था। विश्व बैंक ने मंगलवार को जारी अपने वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में कहा कि वित्त वर्ष 2018-19 में भारत के 7.20 प्रतिशत की दर से वृद्धि करने का अनुमान है। विश्व बैंक ने कहा कि 2018 में चीन की आर्थिक वृद्धि दर 6.60 प्रतिशत थी। इस दर के गिरकर 2019 में 6.20 प्रतिशत, 2020 में 6.10 प्रतिशत और 2021 में 6 प्रतिशत पर आ जाने का अनुमान है। इसके साथ ही भारत

दुनिया की सबसे तेजी से वृद्धि करने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा। वर्ष 2021 तक भारत की आर्थिक वृद्धि दर चीन के छह प्रतिशत की तुलना में डेढ़ प्रतिशत अधिक होगी। विश्व बैंक के अनुसार, 2019-20 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 7.50 प्रतिशत पर रहने का अनुमान है। विश्व बैंक ने पिछले पूर्वानुमान में भी 2019-20 में वृद्धि दर 7.50 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया था। उसने कहा कि



इसके बाद अगले दो वित्त वर्ष तक वृद्धि दर की यही गति बरकरार रहने वाली है। उसने कहा, "मुद्रास्फीति रिजर्व बैंक के लक्ष्य से नीचे है जिससे मौद्रिक नीति सुगम रहेगी। इसके साथ ही ऋण की वृद्धि दर के मजबूत होने से निजी उपभोग एवं निवेश को फायदा होगा।"

1 दिन के विराम के बाद फिर घटे पेट्रोल, डीजल के दाम
नई दिल्ली (आरएनएस)। पेट्रोल और डीजल के दाम में लगातार छह दिनों से जारी गिरावट बुधवार को थम गई थी, जिसके बाद गुरुवार को फिर पेट्रोल और डीजल के दाम कम हो गए। तेल विपणन कंपनियों ने पेट्रोल के दाम में गुरुवार को दिल्ली और कोलकाता में 16 पैसे, मुंबई में 15 पैसे और चेन्नई में 17 पैसे प्रति लीटर की कटौती की, जबकि डीजल के दाम दिल्ली और कोलकाता में 34 पैसे, मुंबई में 37 पैसे और चेन्नई में 36 पैसे लीटर घट गए हैं।

अंतरिम बजट में किए गए आवंटन को बरकरार रखेगा वित्त मंत्रालय

नई दिल्ली (आरएनएस)। वित्त मंत्रालय ने विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों को अंतरिम बजट में किए गए आवंटन को चालू वित्त वर्ष के लिए अंतिम बजट में भी जारी रखने के संकेत दिए हैं। अंतिम बजट लोकसभा में पांच जुलाई को पेश किया जाना है। लोकसभा चुनाव को देखते हुए वित्त मंत्रालय ने फरवरी में अंतरिम बजट पेश किया था। अब चूंकि नयी सरकार का गठन हो चुका है, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पांच जुलाई को बजट पेश करेंगी। मंत्रालय ने एक परिपत्र में यह भी कहा कि वह सिर्फ उन आवश्यक मदों के लिए अतिरिक्त आवंटन करेगा, जिनके लिए अंतरिम बजट में आवंटन नहीं किया गया था। मंत्रालय ने कहा, 'अंतरिम बजट 2019-20 में किए गए आवंटनों में कोई बदलाव नहीं किया जाएगा।' सीतारमण की बजट टीम में वित्त (राज्य) मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर और मुख्य आर्थिक सलाहकार कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यम शामिल हैं। आधिकारिक टीम की अगुवाई वित्त सचिव सुभाष चंद्र गर्ग, खर्च सचिव गिरीश चंद्र मुर्मू, राजस्व सचिव अजय भूषण पांडेय, दीपम सचिव अतनु चक्रवर्ती और वित्तीय मामलों के सचिव राजीव कुमार करेंगे।

एनईएफटी और आरटीजीएस पर नहीं लगेगा कोई चार्ज

आरबीआई का बड़ा फैसला
मुंबई (आरएनएस)। रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने रिप्ल टाइम ग्रांस सेटलमेंट सिस्टम (आरटीजीएस) और नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड्स ट्रांसफर (एनईएफटी) को निःशुल्क करने का फैसला किया है। केंद्रीय बैंक की मौद्रिक समीक्षा समिति की बैठक के बाद गुरुवार को जारी विकासशील एवं नियामक नीति

बयान में कहा गया है कि इसके बारे में एक सप्ताह के भीतर अनुदेश जारी किए जा एंगे। बयान के अनुसार, डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए रिजर्व बैंक द्वारा आरटीजीएस और एनईएफटी प्रणाली को शुल्क मुक्त बनाने का फैसला किया गया है। इसके बाद बैंकों को भी इस फैसले का लाभ अपने ग्राहकों को देना होगा। फिलहाल आरबीआई आरटीजीएस

और एनईएफटी प्रणाली के जरिए हुए लेनदेन के लिए बैंकों से शुल्क लेता है जिसके बदले बैंक ग्राहकों से इसके लिए शुल्क वसूलते हैं। नेट बैंकिंग के जरिये ऑनलाइन लेनदेन तीन तरीके से किया जाता है। आरटीजीएस और एनईएफटी के अलावा आईएमपीएस यानी तत्काल भुगतान सेवा की भी एक प्रणाली है जिसका शुल्क एनईएफटी से ज्यादा होता है। बयान में आईएमपीएस के बारे में



कुछ नहीं कहा गया है। आरटीजीएस सिर्फ दो लाख रुपये या उससे ज्यादा की राशि के लेनदेन के लिए इस्तेमाल होता है जबकि आईएमपीएस का इस्तेमाल सिर्फ दो लाख रुपये तक के लेनदेन के लिए हो सकता है।

मई में एक साल के निचले स्तर पर आई सेवा गतिविधियों की वृद्धि दर: पीएमआई

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश में सेवा क्षेत्र की गतिविधियों की वृद्धि दर मई महीने में एक साल के निचले स्तर पर आ गई। यह गिरावट मई महीने के दौरान लोकसभा चुनाव के कारण नए कार्यों की वृद्धि प्रभावित होने से आई है। बुधवार को जारी एक मासिक सर्वेक्षण रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। निक्की इंडिया सर्विसेज बिजनस एक्टिविटी का सूचकांक मई महीने में गिरकर 50.20 पर आ गया। यह पिछले 12 महीने में वृद्धि की सबसे धीमी दर है। अप्रैल महीने में यह 51 पर रहा था। हालांकि सेवा गतिविधियों की वृद्धि सुस्त पड़ने के बाद भी यह लगातार 12वां महीना है जब सेवा क्षेत्र में विस्तार हुआ है। सूचकांक का 50 से ऊपर रहना विस्तार का संकेत देता है जबकि 50 से नीचे का सूचकांक संकुचन का संकेतक है। आईएचएस मार्केट की प्रधान अर्थशास्त्री एवं रिपोर्ट की लेखिका पॉलिना डी लीमा ने कहा, भारत का प्रधान सेवा क्षेत्र फिर से चुनाव के कारण प्रभावित हुआ है और लगातार तीसरे महीने नए कार्यों एवं कारोबारी गतिविधियों दोनों में नरमी आई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि गिरावट तात्कालिक भी साबित हो सकती है क्योंकि कंपनियों ने नियुक्तियां बढ़ा दी हैं और वे भविष्य के परिदृश्य के प्रति अधिक भरोसे में हैं। लीमा ने कहा, नियुक्ति गतिविधियों में तेजी और धारणा में सुधार से निकट भविष्य में सेवा क्षेत्र का रुख पलटने के संकेत मिलते हैं।

पसीना नहीं आया। मुझे खेलने में मजा आया, हालांकि यह रोहित शर्मा की पहचान वाली पारी नहीं थी, लेकिन अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए इस तरह की बल्लेबाजी करनी पड़ी।

फिएट क्राइसलर ने रेनो के साथ विलय का प्रस्ताव वापस लिया

पेरिस (आरएनएस)। फिएट क्राइसलर ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने रेनो के साथ विलय का प्रस्ताव वापस ले लिया है। उसने कहा कि फ्रांस की सरकार के साथ किसी समझौते पर पहुंचना मुश्किल होगा। फिएट क्राइसलर ने एक बयान में कहा कि वह अपनी पेशकश के हितों के प्रति पूरी तरह आश्चस्त बनी हुई है लेकिन फ्रांस में अभी ऐसे राजनीतिक हालात नहीं हैं कि इस तरह का अनुबंध किया जा सके। रेनो में फ्रांस सरकार की सर्वाधिक 15 प्रतिशत हिस्सेदारी है। सरकार ने 50-50 प्रतिशत हिस्सेदारी के विलय के प्रस्ताव के संबंध में किसी भी तरह की हड़बड़ी के खिलाफ चेतावनी दी थी। रेनो से जुड़े एक करीबी सूत्र ने बताया कि फ्रांस के वित्त मंत्री बर्नो ली मेयर ने जापान की सप्ताहांत की यात्रा के बाद अगले बृहस्पतिवार को निदेशक मंडल की एक बैठक की इच्छा प्रकट की थी।

बेसिक्स पर बने रहने और साझेदारी करने की कोशिश थी: रोहित

साउथैम्पटन (आरएनएस)। आईसीसी विश्व कप-2019 के अपने पहले मैच में शतकीय पारी खेल भारत को बुधवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ छह विकेट से जीत दिलाने वाले सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने कहा है कि उनकी कोशिश मुश्किल विकेट पर बेसिक्स पर बने रहने और साझेदारियां करने की थी। रोहित ने गेंदबाजों की मददगार पिच पर 144 गेंदों पर 13 चौके और दो छक्कों की मदद से नाबाद 122 रनों की पारी खेली। यह रोहित का विश्व कप में दूसरा शतक है। इस पारी के लिए रोहित को मैन ऑफ द मैच चुना गया। मैच के बाद रोहित ने कहा, इस पिच में गेंदबाजों के लिए कुछ था। मैं अपना स्वाभाविक खेल नहीं खेल सका। मुझे अपने शॉट्स खेलने में समय लगा। मुझे अपने कुछ शॉट्स भी रोकने पड़े। शुरुआत में मेरी कोशिश बॉल छोड़ने की थी। मैं अपने बेसिक्स पर बने रहना चाहता था और साझेदारियां करना चाहता था। टीम के उप-कप्तान रोहित ने कहा कि टीम के हर बल्लेबाज का

अपना काम है। किसी दिन कोई चलता है तो किसी कोई और। रोहित ने कहा, सभी बल्लेबाजों की अपनी जिम्मेदारी है। हम किसी एक के भरोसे नहीं रहते। यही इस टीम की पहचान है। हमने ऐसा ही किया। यह बड़ा टूर्नामेंट है और कभी कोई आगे आएगा तो कभी कोई। रोहित ने इंग्लैंड के मौसम पर कहा, हम इंग्लैंड में गर्मियों की शुरुआत में खेल रहे हैं। आज के पूरे दिन मौसम अच्छा था, ज्यादा



आज का राशिफल

व्यावसायिक तथा अन्य क्षेत्रों में आज का दिन आपके लिए लाभप्रद है। विवाह संबंधी गतिविधियां भी तीव्र होंगी। पर्यटन पर जा सकते हैं। तीर्थ दर्शन से मन प्रसन्न होगा। धार्मिक और सामाजिक कार्यों के पीछे धन खर्च का प्रबल योग है। संबंधियों और मित्रों के साथ वाद-विवाद का योग है। व्यवहार में आध्यात्मिकता देखने को मिलेगी। निजी संबंधियों के साथ वाद-विवाद से बचें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आज का दिन आध्यात्मिक कार्यों के लिए बहुत अच्छा है। अधिक लाभ भी होगा। धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों में अधिक मन लगेगा। व्यवसाय और व्यापार में भी वातावरण अनुकूल रहेगा। सभी कार्य सरलता से पूर्ण होंगे। जीवन में भी आनंद के अवसर बढ़ेंगे। आज का दिन आपके लिए अनुकूलता और प्रतिकूलता का मिलानुत्पादन स्वरूप होगा। व्यापारियों के साथ लेन-देन के मामले में कौन जीत पाएगा? वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। भाग्य आज आपका साथ देने को बेसन्न है। सितारे कहते हैं कि आज कर्म करते जाएं और सब कुछ भाग्य पर छोड़ दें। लाभ के प्रबल योग हैं। आज यात्रा करने से परहेज करें। वाहन चलाने में सावधानी बरतें अन्यथा चोट-चपेट की आशंका है। आज व्यवसाय में धन संबंधित आयोजन करने का भी योग प्रबल है। आज का दिन बेहद आनंददायी साबित होगा। अभूषणों की खरीदारी करेंगे साथ ही कला के प्रति रुझान बढ़ेगा। व्यापार में आज का दिन आपके लिए बहुत ही शुभ है। संपत्ति संबंधित कार्यों एवं गृहस्थ जीवन के प्रश्नों का समाधान मिल जाएगा। व्यवसायीजनों के लिए आज का दिन अनुकूल है।

'एग ब्रेड टोस्ट' बनाने की विधि...

सामग्री : 1 अंडा, ज़रूरत भर पानी, एक टेबलस्पून व्हाइट विनेगर, 4 टीस्पून ऐस्पैरेगस पेस्ट, थोड़े चिकेन की पतली स्लाइस, 1 पीस फ्रेंच ब्रेड, थोड़ा सा ऑलिव ऑयल, कुछ हर्ब्स

विधि : साँसपैन में पानी और विनेगर डालकर उबाल आने दें। अब अंडा डालें। ध्यान रखें, अंडे को सिर्फ पोच करना है, इसे उबालना नहीं है। छीलकर अलग रखें। फ्राइंग पैन में चिकेन स्लाइस को दोनों तरफ से हलका सेंक लें। ऊपर से काली मिर्च पाउडर छिड़कें और अलग रखें। अब उसी पैन में तेल डालकर ऐस्पैरेगस पेस्ट डालकर भूनें। फ्रेंच ब्रेड को टोस्ट कर लें। प्लेट में ब्रेड रखने के बाद ऐस्पैरेगस पेस्ट रखें। चिकेन की स्लाइस और अंडे को दो हिस्सों में रखें। अब नमक, काली मिर्च पाउडर, हर्ब्स और ऑलिव ऑयल डालकर सर्व करें।



शब्द सामर्थ्य - 87

ब्यां से दार्प : 1. अनुचित, असत्य, जो ठीक न हो 2. उपहार, भेंट 3. खबर, शख्त 4. अविचार, धोखा 5. शक, शंका 6. अविचार, धोखा 7. अविचार, धोखा 8. अविचार, धोखा 9. अविचार, धोखा 10. अविचार, धोखा 11. अविचार, धोखा 12. अविचार, धोखा 13. अविचार, धोखा 14. अविचार, धोखा 15. अविचार, धोखा 16. अविचार, धोखा 17. अविचार, धोखा 18. अविचार, धोखा 19. अविचार, धोखा 20. अविचार, धोखा 21. अविचार, धोखा 22. अविचार, धोखा 23. अविचार, धोखा 24. अविचार, धोखा 25. अविचार, धोखा 26. अविचार, धोखा 27. अविचार, धोखा 28. अविचार, धोखा 29. अविचार, धोखा 30. अविचार, धोखा 31. अविचार, धोखा 32. अविचार, धोखा 33. अविचार, धोखा 34. अविचार, धोखा 35. अविचार, धोखा 36. अविचार, धोखा 37. अविचार, धोखा 38. अविचार, धोखा 39. अविचार, धोखा 40. अविचार, धोखा 41. अविचार, धोखा 42. अविचार, धोखा 43. अविचार, धोखा 44. अविचार, धोखा 45. अविचार, धोखा 46. अविचार, धोखा 47. अविचार, धोखा 48. अविचार, धोखा 49. अविचार, धोखा 50. अविचार, धोखा 51. अविचार, धोखा 52. अविचार, धोखा 53. अविचार, धोखा 54. अविचार, धोखा 55. अविचार, धोखा 56. अविचार, धोखा 57. अविचार, धोखा 58. अविचार, धोखा 59. अविचार, धोखा 60. अविचार, धोखा 61. अविचार, धोखा 62. अविचार, धोखा 63. अविचार, धोखा 64. अविचार, धोखा 65. अविचार, धोखा 66. अविचार, धोखा 67. अविचार, धोखा 68. अविचार, धोखा 69. अविचार, धोखा 70. अविचार, धोखा 71. अविचार, धोखा 72. अविचार, धोखा 73. अविचार, धोखा 74. अविचार, धोखा 75. अविचार, धोखा 76. अविचार, धोखा 77. अविचार, धोखा 78. अविचार, धोखा 79. अविचार, धोखा 80. अविचार, धोखा 81. अविचार, धोखा 82. अविचार, धोखा 83. अविचार, धोखा 84. अविचार, धोखा 85. अविचार, धोखा 86. अविचार, धोखा 87. अविचार, धोखा 88. अविचार, धोखा 89. अविचार, धोखा 90. अविचार, धोखा 91. अविचार, धोखा 92. अविचार, धोखा 93. अविचार, धोखा 94. अविचार, धोखा 95. अविचार, धोखा 96. अविचार, धोखा 97. अविचार, धोखा 98. अविचार, धोखा 99. अविचार, धोखा 100. अविचार, धोखा 101. अविचार, धोखा 102. अविचार, धोखा 103. अविचार, धोखा 104. अविचार, धोखा 105. अविचार, धोखा 106. अविचार, धोखा 107. अविचार, धोखा 108. अविचार, धोखा 109. अविचार, धोखा 110. अविचार, धोखा 111. अविचार, धोखा 112. अविचार, धोखा 113. अविचार, धोखा 114. अविचार, धोखा 115. अविचार, धोखा 116. अविचार, धोखा 117. अविचार, धोखा 118. अविचार, धोखा 119. अविचार, धोखा 120. अविचार, धोखा 121. अविचार, धोखा 122. अविचार, धोखा 123. अविचार, धोखा 124. अविचार, धोखा 125. अविचार, धोखा 126. अविचार, धोखा 127. अविचार, धोखा 128. अविचार, धोखा 129. अविचार, धोखा 130. अविचार, धोखा 131. अविचार, धोखा 132. अविचार, धोखा 133. अविचार, धोखा 134. अविचार, धोखा 135. अविचार, धोखा 136. अविचार, धोखा 137. अविचार, धोखा 138. अविचार, धोखा 139. अविचार, धोखा 140. अविचार, धोखा 141. अविचार, धोखा 142. अविचार, धोखा 143. अविचार, धोखा 144. अविचार, धोखा 145. अविचार, धोखा 146. अविचार, धोखा 147. अविचार, धोखा 148. अविचार, धोखा 149. अविचार, धोखा 150. अविचार, धोखा 151. अविचार, धोखा 152. अविचार, धोखा 153. अविचार, धोखा 154. अविचार, धोखा 155. अविचार, धोखा 156. अविचार, धोखा 157. अविचार, धोखा 158. अविचार, धोखा 159. अविचार, धोखा 160. अविचार, धोखा 161. अविचार, धोखा 162. अविचार, धोखा 163. अविचार, धोखा 164. अविचार, धोखा 165. अविचार, धोखा 166. अविचार, धोखा 167. अविचार, धोखा 168. अविचार, धोखा 169. अविचार, धोखा 170. अविचार, धोखा 171. अविचार, धोखा 172. अविचार, धोखा 173. अविचार, धोखा 174. अविचार, धोखा 175. अविचार, धोखा 176. अविचार, धोखा 177. अविचार, धोखा 178. अविचार, धोखा 179. अविचार, धोखा 180. अविचार, धोखा 181. अविचार, धोखा 182. अविचार, धोखा 183. अविचार, धोखा 184. अविचार, धोखा 185. अविचार, धोखा 186. अविचार, धोखा 187. अविचार, धोखा 188. अविचार, धोखा 189. अविचार, धोखा 190. अविचार, धोखा 191. अविचार, धोखा 192. अविचार, धोखा 193. अविचार, धोखा 194. अविचार, धोखा 195. अविचार, धोखा 196. अविचार, धोखा 197. अविचार, धोखा 198. अविचार, धोखा 199. अविचार, धोखा 200. अविचार, धोखा 201. अविचार, धोखा 202. अविचार, धोखा 203. अविचार, धोखा 204. अविचार, धोखा 205. अविचार, धोखा 206. अविचार, धोखा 207. अविचार, धोखा 208. अविचार, धोखा 209. अविचार, धोखा 210. अविचार, धोखा 211. अविचार, धोखा 212. अविचार, धोखा 213. अविचार, धोखा 214. अविचार, धोखा 215. अविचार, धोखा 216. अविचार, धोखा 217. अविचार, धोखा 218. अविचार, धोखा 219. अविचार, धोखा 220. अविचार, धोखा 221. अविचार, धोखा 222. अविचार, धोखा 223. अविचार, धोखा 224. अविचार, धोखा 225. अविचार, धोखा 226. अविचार, धोखा 227. अविचार, धोखा 228. अविचार, धोखा 229. अविचार, धोखा 230. अविचार, धोखा 231. अविचार, धोखा 232. अविचार, धोखा 233. अविचार, धोखा 234. अविचार, धोखा 235. अविचार, धोखा 236. अविचार, धोखा 237. अविचार, धोखा 238. अविचार, धोखा 239. अविचार, धोखा 240. अविचार, धोखा 241. अविचार, धोखा 242. अविचार, धोखा 243. अविचार, धोखा 244. अविचार, धोखा 245. अविचार, धोखा 246. अविचार, धोखा 247. अविचार, धोखा 248. अविचार, धोखा 249. अविचार, धोखा 250. अविचार, धोखा 251. अविचार, धोखा 252. अविचार, धोखा 253. अविचार, धोखा 254. अविचार, धोखा 255. अविचार, धोखा 256. अविचार, धोखा 257. अविचार, धोखा 258. अविचार, धोखा 259. अविचार, धोखा 260. अविचार, धोखा 261. अविचार, धोखा 262. अविचार, धोखा 263. अविचार, धोखा 264. अविचार, धोखा 265. अविचार, धोखा 266. अविचार, धोखा 267. अविचार, धोखा 268. अविचार, धोखा 269. अविचार, धोखा 270. अविचार, धोखा 271. अविचार, धोखा 272. अविचार, धोखा 273. अविचार, धोखा 274. अविचार, धोखा 275. अविचार, धोखा 276. अविचार, धोखा 277. अविचार, धोखा 278. अविचार, धोखा 279. अविचार, धोखा 280. अविचार, धोखा 281. अविचार, धोखा 282. अविचार, धोखा 283. अविचार, धोखा 284. अविचार, धोखा 285. अविचार, धोखा 286. अविचार, धोखा 287. अविचार, धोखा 288. अविचार, धोखा 289. अविचार, धोखा 290. अविचार, धोखा 291. अविचार, धोखा 292. अविचार, धोखा 293. अविचार, धोखा 294. अविचार, धोखा 295. अविचार, धोखा 296. अविचार, धोखा 297. अविचार, धोखा 298. अविचार, धोखा 299. अविचार, धोखा 300. अविचार, धोखा 301. अविचार, धोखा 302. अविचार, धोखा 303. अविचार, धोखा 304. अविचार, धोखा 305. अविचार, धोखा 306. अविचार, धोखा 307. अविचार, धोखा 308. अविचार, धोखा 309. अविचार, धोखा 310. अविचार, धोखा 311. अविचार, धोखा 312. अविचार, धोखा 313. अविचार, धोखा 314. अविचार, धोखा 315. अविचार, धोखा 316. अविचार, धोखा 317. अविचार, धोखा 318. अविचार, धोखा 319. अविचार, धोखा 320. अविचार, धोखा 321. अविचार, धोखा 322. अविचार, धोखा 323. अविचार, धोखा 324. अविचार, धोखा 325. अविचार, धोखा 326. अविचार, धोखा 327. अविचार, धोखा 328. अविचार, धोखा 329. अविचार, धोखा 330. अविचार, धोखा 331. अविचार, धोखा 332. अविचार, धोखा 333. अविचार, धोखा 334. अविचार, धोखा 335. अविचार, धोखा 336. अविचार, धोखा 337. अविचार, धोखा 338. अविचार, धोखा 339. अविचार, धोखा 340. अविचार, धोखा 341. अविचार, धोखा 342. अविचार, धोखा 343. अविचार, धोखा 344. अविचार, धोखा 345. अविचार, धोखा 346. अविचार, धोखा 347. अविचार, धोखा 348. अविचार, धोखा 349. अविचार, धोखा 350. अविचार, धोखा 351. अविचार, धोखा 352. अविचार, धोखा 353. अविचार, धोखा 354. अविचार, धोखा 355. अविचार, धोखा 356. अविचार, धोखा 357. अविचार, धोखा 358. अविचार, धोखा 359. अविचार, धोखा 360. अविचार, धोखा 361. अविचार, धोखा 362. अविचार, धोखा 363. अविचार, धोखा 364. अविचार, धोखा 365. अविचार, धोखा 366. अविचार, धोखा 367. अविचार, धोखा 368. अविचार, धोखा 369. अविचार, धोखा 370. अविचार, धोखा 371. अविचार, धोखा 372. अविचार, धोखा 373. अविचार, धोखा 374. अविचार, धोखा 375. अविचार, धोखा 376. अविचार, धोखा 377. अविचार, धोखा 378. अविचार, धोखा 379. अविचार, धोखा 380. अविचार, धोखा 381. अविचार, धोखा 382. अविचार, धोखा 383. अविचार, धोखा 384. अविचार, धोखा 385. अविचार, धोखा 386. अविचार, धोखा 387. अविचार, धोखा 388. अविचार, धोखा 389. अविचार, धोखा 390. अविचार, धोखा 391. अविचार, धोखा 392. अविचार, धोखा 393. अविचार, धोखा 394. अविचार, धोखा 395. अविचार, धोखा 396. अविचार, धोखा 397. अविचार, धोखा 398. अविचार, धोखा 399. अविचार, धोखा 400. अविचार, धोखा 401. अविचार, धोखा 402. अविचार, धोखा 403. अविचार, धोखा 404. अविचार, धोखा 405. अविचार, धोखा 406. अविचार, धोखा 407. अविचार, धोखा 408. अविचार, धोखा 409. अविचार, धोखा 410. अविचार, धोखा 411. अविचार, धोखा 412. अविचार, धोखा 413. अविचार, धोखा 414. अविचार, धोखा 415. अविचार, धोखा 416. अविचार, धोखा 417. अविचार, धोखा 418. अविचार, धोखा 419. अविचार, धोखा 420. अविचार, धोखा 421. अविचार, धोखा 422. अविचार, धोखा 423. अविचार, धोखा 424. अविचार, धोखा 425. अविचार, धोखा 426. अविचार, धोखा 427. अविचार, धोखा 428. अविचार, धोखा 429. अविचार, धोखा 430. अविचार, धोखा 431. अविचार, धोखा 432. अविचार, धोखा 433. अविचार, धोखा 434. अविचार, धोखा 435. अविचार, धोखा 436. अविचार, धोखा 437. अविचार, धोखा 438. अविचार, धोखा 439. अविचार, धोखा 440. अविचार, धोखा 441. अविचार, धोखा 442. अविचार, धोखा 443. अविचार, धोखा 444. अविचार, धोखा 445. अविचार, धोखा 446. अविचार, धोखा 447. अविचार, धोखा 448. अविचार, धोखा 449. अविचार, धोखा 450. अविचार, धोखा 451. अविचार, धोखा 452. अविचार, धोखा 453. अविचार, धोखा 454. अविचार, धोखा 455. अविचार, धोखा 456. अविचार, धोखा 457. अविचार, धोखा 458. अविचार, धोखा 459. अविचार, धोखा 460. अविचार, धोखा 461. अविचार, धोखा 462. अविचार, धोखा 463. अविचार, धोखा 464. अविचार, धोखा 465. अविचार, धोखा 466. अविचार, धोखा 467. अविचार, धोखा 468. अविचार, धोखा 469. अविचार, धोखा 470. अविचार, धोखा 471. अविचार, धोखा 472. अविचार, धोखा 473. अविचार, धोखा 474. अविचार, धोखा 475. अविचार, धोखा 476. अविचार, धोखा 477. अविचार, धोखा 478. अविचार, धोखा 479. अविचार, धोखा 480. अविचार, धोखा